WWW.GRADESETTER.COM

संस्कृति भ्रमण

कक्षा-10

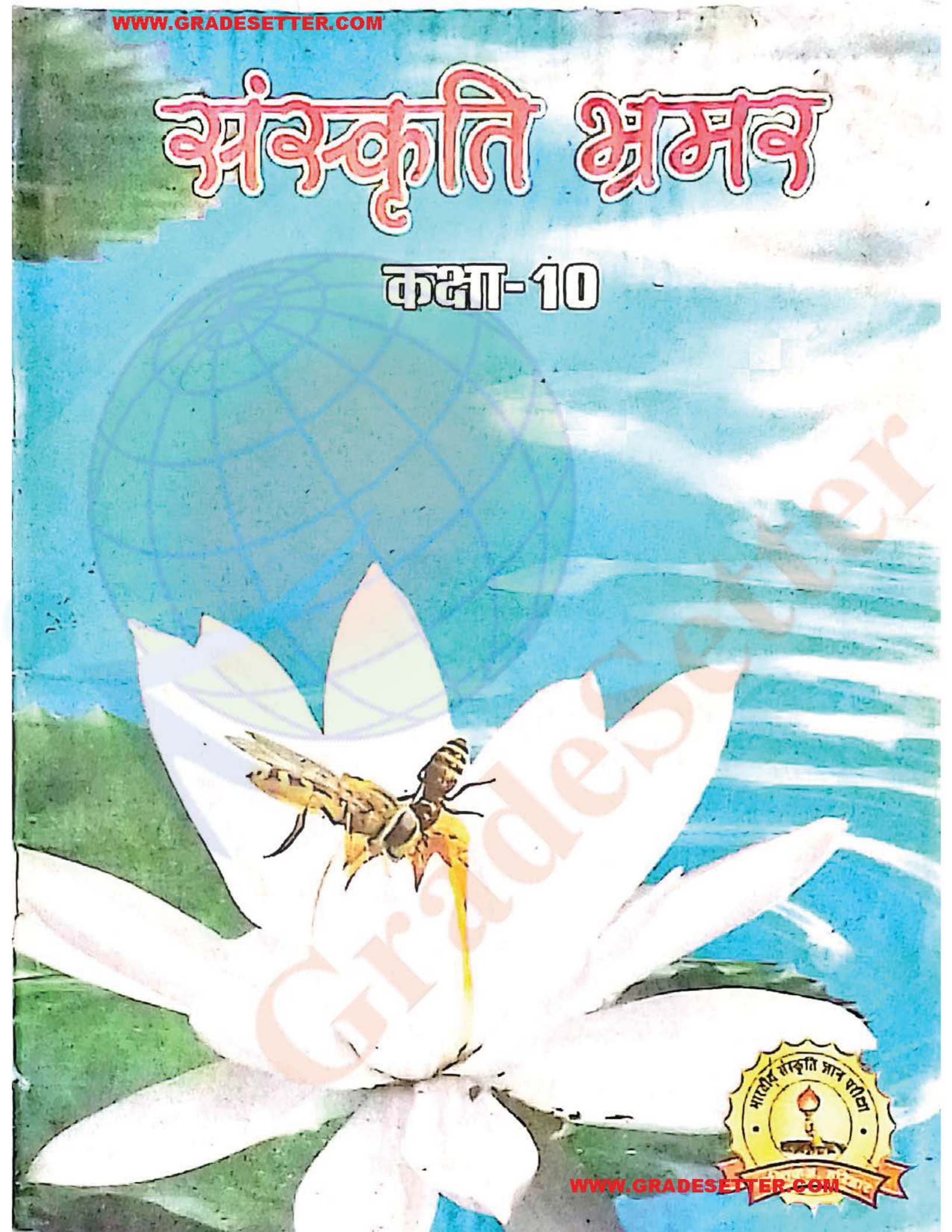

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

संस्कृति पुरुष परम पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा जी की कलम से

संस्कृति की एक झलक

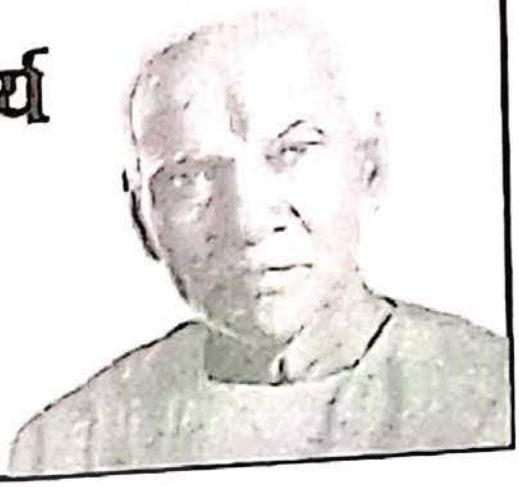

भारतीय संस्कृति का उद्भव, विकास, प्रयोग, पोषण, एवं विस्तार भारत से हुआ इसलिए उसे उस नाम से पुकारा जाता हैं तो यह उचित ही है पर इसका अर्थ यह नहीं माना जाना चाहिए कि उसका प्रयोग इसी देश के निवासियों तक सीमित था अथवा रहना चाहिए।

यजुर्वेद 7/14 में एक पद आता है **सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा** अर्थात् यह प्रथम संस्कृति है, जो विश्वव्यापी है। सृष्टि के आरम्भ में सम्भव है ऐसी छुट-पुट संस्कृतियों का भी उदय हुआ हो, जो वर्ग विशेष या क्षेत्र विशेष के लिए ही उपयोगी रही हों। उन सब को पीछे छोड़कर यह भारतीय संस्कृति ही प्रथम बार इस रूप से प्रस्तुत हुई कि उसे विश्व- संस्कृति कहा जा सके। हुआ भी यही, जब उसका स्वरूप सर्वसाधारण को विदित हुआ तो उसकी सर्वश्रेष्ठता को सर्वत्र स्वीकार ही किया जाता रहा और सर्वोच्च भी माना जाता रहा , फलस्वरूप वह विश्वव्यापी होती चली गई ।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

संस्कृति भ्रमर

कक्षा-10 वी

लेखन एवं संकलन
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट

नैतिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान का एक रचनात्मक अभियान

डॉ. प्रणव पण्ड्या
प्रमुख - अखिल विश्व गायत्री परिवार
कुलाधिपति - देव संस्कृति विश्वविद्यालय
संपादक - अखण्ड ज्योति

शैलबाला पण्ड्या
सुपुत्री: माता भगवती देवी शर्मा
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

3 अप्रैल 2013,
नवसंवत 2070

शुभ कामना संदेश

मंगलमयो नूतनाब्दः ॥ पराभवनामको नूतनसंवत्सरः सर्वेभ्यः मंगलमयो भूयात् ॥

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रम कक्षा-5 'संस्कृति अंकुर', कक्षा-6 'संस्कृति पल्लव', कक्षा-7 'संस्कृति पुष्प', कक्षा-8 'संस्कृति सुवास', कक्षा-9 'संस्कृति मधु' एवं कक्षा-10 'संस्कृति भ्रमर' को पाकर मन हर्षित है। नवीन पाठ्यक्रम को तैयार करने में संपादक मंडल को विशेष शोध कार्य करना पड़ा। सन् 1994 से चल रहे भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा से जुड़े अध्यापकों, छात्र-छात्राओं के विचार इसमें सम्मिलित किए गए। पाठ्यक्रम एवं प्रश्नोत्तरी बनाने में इस बात का भी ध्यान रखा गया कि ये प्रश्न छात्र-छात्राओं के लिए विभिन्न स्तर पर भारतीय संस्कृति, अध्यात्म, विज्ञान, धर्म, दर्शन की जानकारी तो उपलब्ध कराएँ साथ ही होने वाली प्रतियोगिता परीक्षा में भी उपयोगी हों।

'भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा' अपने बीसवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इन बीस वर्षों की निर्बाध यात्रा में लाखों स्कूलों एवं अध्यापकों सहित करोड़ों छात्र-छात्राओं के जीवन में दिव्यता का समावेश किया है। सन् 1994 के प्रथम सत्र में जिन छात्र-छात्राओं ने परीक्षा दी होगी वे अब एक कुशल नागरिक एवं भारतीय संस्कृति-सभ्यता को फैलाने वाले संस्कृति के संवाहक की भूमिका निभा रहे होंगे।

2012-13 सत्र के अनुसार भारत के 22 प्रांत, 450 जिले, 1 लाख स्कूल एवं अध्यापकों के साथ 9 भाषाओं में आयोजित होने वाली इस परीक्षा ने 46 लाख विद्यार्थियों के जीवन को प्रभावित किया है। इन विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, अध्यात्म विज्ञान एवं जीवन जीने की कला रूपी त्रिवेणी में स्नान कराया है। इन परीक्षाओं में बैठने वाले छात्र-छात्राएँ जहाँ भी हैं, अन्य विद्यार्थियों की तुलना में गरिमापूर्ण एवं मानवीय मूल्यों को जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हुए जीवन जी रहे हैं।

नवीन प्रकाशन के लिए भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा से जुड़े विद्यार्थियों, अध्यापकों, क्षेत्र के जुड़े कार्यकर्त्ताओं को शुभ कामना, संपादक मंडल को हार्दिक बधाई, ऋषियुग्म की ओर से स्नेह भरा आशीर्वाद।

(डॉ. प्रणव पण्ड्या)

(शैलबाला पण्ड्या)

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार - 249411 (उत्तराखण्ड) भारत
फोन : (1334) 260602, 260309, 261328 • फैक्स : (1334) 260860
वेब साईट : www.awgp.org • ई-मेल : shantikunj@awgp.org

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

विषय - सूची

खंड (अ)—पाठ्य-पुस्तक

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ
01.	तीर्थ परंपरा का स्वरूप	04
02.	बुद्धि एवं स्वास्थ्यरक्षक-आँवला	06
03.	धर्म, संस्कृति, कला व साहित्य का संगम उत्तर प्रदेश	08
04.	प्रतिशोध या प्रतिकार	10
05.	नारी मर्यादा की प्रतीक महारानी पद्मिनी	12
06.	भारतीय संस्कृति का दिव्य संदेश	14
07.	हरीतिमा संवर्द्धन—वृक्षारोपण का आधार वर्षा जल	16
08.	वीरों की भूमि राजस्थान	18
09.	गुरुदेव के सपनों का विश्वविद्यालय	20
10.	वैज्ञानिक ऋषि	21

खंड (ब)—प्रश्न बैंक 23 से 37

अब आप पाएँगे—आध्यात्मिक पर्यावरण, ऋषियों की खोज, नैतिक शिक्षा, अपना देश, इतिहास, महापुरुष, संस्कृति के व्यापक पहलू, स्वास्थ्य-आसन, प्राणायाम, खेल एवं विज्ञान संबंधित ज्ञान प्रदान करने वाले बहुमुखी प्रश्न।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

तीर्थ परंपरा का स्वरूप

तीर्थों का मूलभूत उद्देश्य तो धर्म-धारणा की साधना एवं शिक्षण सदा शाश्वत और सुनिश्चित ही रहा है किंतु उसे प्रयुक्त करने में सामयिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, उसमें उपयोगी हेर-फेर भी होता रहा है।

तीर्थ परंपरा का प्राचीन स्वरूप—तीर्थयात्रा की पुण्य प्रक्रिया का प्रयोजन 'विचारशील सज्जनों का सर्वसाधारण से संपर्क बनाना और आदर्शवादी प्रशिक्षण से लोक-मानस को परिष्कृत करना' अर्थात धर्म मंच से लोक शिक्षण रहा है। इस ज्ञानदान से बढ़कर कोई वस्तु नहीं। जीवन को धन्य बनाने वालों के लिए यही एक राजमार्ग निर्धारित है। तीर्थयात्रा की महत्ता इसी महान अवधारणा से जुड़ी है। प्राचीनकाल में तीर्थयात्राएँ दूरदर्शी सद्परिणामों को ध्यान में रखते हुए की जाती थीं। जल्दी-जल्दी लंबी यात्रा कर बहुत देखने का लोभ किसी को नहीं होता था। ग्रास थोड़ा लेने उसे बार-बार चबाकर उदरस्थ करने से रस रक्त बनता है। एक साथ मुँह में बहुत भरकर बिना चबाए निगल जाने से वह लाभ के स्थान पर हानिकारक बन जाता है। प्राचीनकाल की यात्राएँ इसी प्रकार की होती थीं, थोड़ा देखकर उसे हृदयंगम करना उद्देश्य होता था। प्राचीनकाल में धर्म प्रचार के लिए मंडलियाँ निकलती थीं। इन समूहों के साथ छात्रगण भी अपने अध्यापकों के साथ निकलते थे। इसे तीर्थयात्रा स्तर का गुरुकुलीय प्रशिक्षण कहा जाता था। संतों की मंडलियाँ भी इसी प्रकार परिभ्रमण करती थीं। आश्रम बनाकर एक ही स्थान पर जमा रहने वाले आचार्य तो केवल वे ही होते थे जो शोध-कार्य करते थे, शेष सभी संत धर्म प्रचारक की भूमिका निभाते थे।

बौद्ध धर्म में परिव्रज्या को आत्म-साधना में सर्वोपरि महत्त्व दिया जाता था। जैन धर्म के चैत्य भी उसी पृष्ठभूमि पर बने और चले। इन संस्थानों से निकली हुई महान प्रतिभाओं ने अपने ज्ञान का आलोक भारत के कोने-कोने तक फैलाया।

अवतारों के और महामानवों के प्रेरक घटनाओं के स्मारक स्थान-स्थान पर अभी भी तीर्थस्थानों के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। ऋषियों की गरिमा, उनकी शिक्षा की उपयोगिता, प्रशिक्षण की व्यापकता से इनकार नहीं किया जा सकता है, वही तो अपनी संस्कृति की रीढ़ रही हैं। व्यास चरक, सुश्रुत, नागार्जुन, पाणिनि, पतंजलि आदि ने अपने-अपने शोध-संस्थान स्थिर रूप से चलाए।

तीर्थयात्रा संतों की क्रिया पद्धति थी। तीन-तीन वर्षों में एक बार उनके विशाल सम्मेलन कुंभ पर्वों के रूप में होते थे जिसमें विचार-विनियम होता रहता था। भारतभूमि के चारों सिरों को तीर्थयात्रा सूत्र में बाँधकर देशव्यापी सांस्कृतिक एकता बनाए रहने की आवश्यकता को ध्यान में

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM
रखते हुए भगवान आद्यशंकराचार्य ने चारों धामों का जीर्णोद्धार कर उन्हें अभिनव स्वरूप दिया था। बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारिका, रामेश्वर इन चारों धामों के भ्रमण से तात्पर्य पूरे भारत का भ्रमण। क्षेत्रीय विभेद के आधार पर पनपने वाली विलगता और विशृंखलता को रोकने में इस धाम-स्थापना ने दूरगामी सत्परिणाम प्रस्तुत किए हैं। सभी धर्मों में भावनाओं को जनमानस में जाग्रत एवं समुन्नत बनाने की योजना को प्रमुखता मिलती रही है और मिलनी चाहिए।

तीर्थ परंपरा के शिक्षण-उद्देश्य के कुछ बिंदु प्रस्तुत हैं-

धार्मिक, नैतिक और चारित्रिक शिष्टाचार

1. प्रत्येक धर्म का सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य है। किसी के धार्मिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप करना अमानवीयता का चिह्न है।

2. जिस समय कोई व्यक्ति ईश्वरोपासना या किसी प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान (जप-पाठ) आदि में लगा हो, उस समय उससे बोलना या टोकना उचित नहीं है।

3. शरीर से कार्य में सक्षम होते हुए, बिना परिश्रम के माँगकर खाना बहुत बुरा है।

4. किसी भिखारी को यदि भीख देना उचित न समझें, तो उसे सीधी तरह मना कर देना चाहिए।

5. धार्मिक स्थानों के पास शांति, स्वच्छता और सदाचार का वातावरण बनाए रखना चाहिए। किसी प्रकार का नशा न करें।

6. सूर्योदय के पूर्व शैया त्याग करना भारतीय संस्कृति का एक स्वर्णिम नियम है, जिससे स्वास्थ्य के अतिरिक्त मनुष्य की मानसिक और आध्यात्मिक वृत्तियाँ भी उच्च बनती हैं।

7. भारतीय सभ्यता के अनुसार जूते पहनकर किसी धार्मिक पवित्र स्थान पर नहीं जाना चाहिए, चाहे वह किसी भी मजहब या संप्रदाय का क्यों न हो।

8. देव स्थानों में प्रवेश करते समय जूता, लाठी, छाता आदि वस्तुएँ वाहर ही रखनी चाहिए।

9. ऐसे स्थानों में, जिनके चारों ओर दीवार या किसी अन्य प्रकार की स्थाई या अस्थाई रोक बनाई हो, विना स्वामी या प्रवंधक की आज्ञा प्राप्त किए घुसना अनुचित है।

10. स्टेशन, बस स्टॉप, डाकखाना या खेल-तमाशों में टिकट विकने की खिड़कियों पर धक्का-मुक्की करना बुरा है। शांतिपूर्वक एक लाइन में खड़े होकर अपने नंवर पर ही पहुँचना चाहिए।

11. सार्वजनिक स्थानों और निजी आवास स्थानों में आने-जाने के संवंध में जो सूचनाएँ लिखी हों, उनका ठीक तरह से पालन करना चाहिए।

12. सभा, सार्वजनिक उत्सव, मेले, खेल-तमाशे आदि में नियमों को जान-वूझकर तोड़ना और उछल-कूद मचाना वचकानापन है।

13. ऐसे स्थानों या सवारियों में जिनमें टिकट लेकर जाना पड़ता है, बिना टिकट के घूमने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। ऐसा करना असभ्यता ही नहीं, वरन एक प्रकार की चोरी है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

बुद्धि एवं स्वास्थ्यरक्षक-आँवला

आँवला को आमलकी नाम से भी जाना जाता है। यह वैदिक काल से औषधि के रूप में व्यवहार में लाया जाता रहा है। आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी बार-बार इसके प्रयोग की महिमा का गान हुआ है। महर्षि च्यवन को बूढ़े से जवान बना देने वाली महान औषधि आँवला को सभी जानते हैं।

नारंगी, संतरा से भी गई गुना अधिक विटामिन सी आँवला में होता है। पाचनसंस्थान को स्वस्थ बनाने एवं यकृत को बल देने वाला आँवला च्यवनप्राश औषधि के रूप में जन-जन के लिए उपयोगी है। उदर रोगों को दूर कर जीवनीशक्ति को बढ़ाने के लिए आँवला सर्वश्रेष्ठ है। आँवले को चटनी, मुरब्बा, अवलेह, आँवलाचूर्ण के रूप में प्रयोग प्रचलित है। त्रिफला चूर्ण का एक घटक आँवला भी है। मुलेठी चूर्ण के साथ आँवला चूर्ण मिलाकर देने से अम्ल-पित्त/ हाइपर एसिडिटी में चमत्कारी लाभ मिलता है।

आयुर्वेदिक गुण—आँवला त्रिदोषनाशक है। यह बलकारक, ग्राही, यकृत के लिए लाभदायक, रक्त-पित्त, अम्ल-पित्त, शोथ-सूजन, रक्त विकार एवं कब्ज दूर करने वाला तथा अरुचि मिटाने वाला है। इसमें जीवनीशक्ति बढ़ाकर शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करने वाला गुण होता है। सूखा आँवला आँखों एवं बालों के लिए हितकारक, धातुवर्द्धक, टूटी हड्डी जोड़ने में सहायक होता है। आँवला की मिठास पित्तजनक दोषों को दूर करती है, आँवला की अम्लता वातजनित दोषों को नष्ट करती है। इसमें विद्यमान कसैलापन कफ-दोषों को नष्ट करने में प्रभावी होता है। इस प्रकार आँवला त्रिदोषनाशक होता है।

मात्रा—ताजे फल का रस 25 मि०ली० प्रतिदिन सुबह-शाम। सूखे फल का चूर्ण 3 से 6 ग्राम प्रतिदिन सुबह-शाम।

विभिन्न रोगों में प्रयोग

* **सिरदर्द आदि में**—आँवलाचूर्ण 10 ग्राम लेकर उसमें उतनी ही मात्रा में मिसरी पीसकर मिला लें, एक गिलास ठंढे पानी के साथ 21 दिन तक सेवन करने से लाभ मिलता है।

* **पेशाब में खून आने पर**—आँवले के रस के साथ मिसरी मिलाकर पीने से रोगी को लाभ होता है। अत्यंत कष्ट से रक्त मिश्रित पेशाब हो रही हो तो आँवला के रस में गन्ने का रस बराबर मात्रा में मिलाकर थोड़ा शहद मिलाकर सेवन कराएँ।

* **नाक से, मुख से या गुदा आदि से रक्तस्राव होने पर**—1. आँवला चूर्ण 5 ग्राम लेकर घी और शक्कर के साथ सुबह-शाम सेवन करने से रक्तस्राव के रोगों में लाभ होता है।

2. अनार के रस के साथ आँवला रस मिलाकर सेवन करने से खून की अनावश्यक गरमी शांत हो जाती है। रक्तस्राव बंद हो जाता है।

3. 200 ग्राम दही में 10 ग्राम आँवलाचूर्ण मिलाकर या ताजा आँवला कद्दूकस किया हुआ मिलाकर मिसरी के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

* **हिचकी, उबकाई और कै में**—आँवले के रस में शहद या मिसरी मिलाकर सेवन क से पित्त विकृति के कारण उत्पन्न हिचकी, उबकाई, कै शांत हो जाते हैं।

* **पीलिया और रक्ताल्पता में**—ताजे आँवले का रस निकालकर उसमें गन्ने का र मिलाकर तथा थोड़ा शहद मिलाकर सुबह-शाम सेवन करने से पुराने ज्वर आदि के कारण उत्पन्न पीलिया या रक्त की कमी दूर होती है।

* **मूत्र में जलन, रुकावट में**—आँवला का रस 20 मि०ली० निकालकर उसमें मिसरी तथा इलायची का चूर्ण मिलाकर पीने से लाभ मिलता है।

* **आँखों की फूली एवं नेत्र रोगों में**—10 ग्राम आँवलाचूर्ण एक गिलास पानी में भिगोकर रखें, प्रात:काल उस पानी को छानकर आई वाशिंग कप/आँख धोने के पात्र में डालकर आँखों को धोएँ, इससे आँखों की लालिमा तथा फूली मिटती है। नेत्र दृष्टि बढ़ती है।

* **बाल धोने के लिए**—सूखे हुए 2-3 आँवले 2 गिलास पानी में डालकर रातभर रखें, प्रात: उन्हें मसल लें और छानकर उस पानी से बाल धोएँ। इससे बालों का झड़ना मिटता है। बालों का सफेद होना रुक जाता है। बाल काले, घने, मुलायम, रेशमी एवं मजबूत बनते हैं।

* **स्त्री रोग** में आँवले का रस, पका केला, शहद, मिसरी, सबको मिलाकर सेवन करने से सोम रोग (स्त्रीरोग) मिटता है।

अन्य उपयोग

1. **आँवले का शुद्ध तेल बनाने की विधि**—1 लीटर तिल का तेल या नारियल का तेल लेकर उतनी ही मात्रा में आँवले का ताजा रस निकालकर आँवला कद्दूकस करके उसका रस निचोड़ लेते हैं। तेल में मिलाकर मंद आँच पर पकाएँ, जब तेल शेष रहे, तब उतारकर ठंढा करके छानकर काँच की बोतल में भरकर रखें। यह तेल सिर में लगाने से बालों के सभी रोगों का निवारण होता है। बाल असमय सफेद हो रहे हों तो इस रोग पर नियंत्रण हो जाता है।

2. **आँवले का मुरब्बा**—आँवले को कद्दूकस करें और काँच के बरतन में डालकर शुद्ध शहद इतना डालें कि आँवला का गूदा पूरी तरह शहद में डूब जाए, बरतन को ढक दें। 20 दिन तक इसे धूप में रखें। अब इसे 10 से 20 ग्राम नित्य सेवन करें। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है तथा ब्लडप्रेशर नियंत्रित एवं संतुलित रहता है। कब्ज, सिर दर्द, गैस, अपच रोग मिटते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. सबसे अधिक विटामिन 'सी' किसमें पाया जाता है?
2. इस पाठ में आँवले के गुण के साथ-साथ उपयोग बताए गए हैं। जो हमारे लिए उपयोगी हैं वे क्या हैं?
3. आँवले के प्रयोग से होने वाले लाभों को बताने की योजना बनाएँ।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

धर्म, संस्कृति, कला व साहित्य का संगम

उत्तर प्रदेश

गंगा-यमुना का क्षेत्र—प्राचीन नाम अंतवेदी, गंगा-यमुना के तटों पर बहुत काल तक भारतीय संस्कृति का विकास होता रहा जिसके केंद्र हस्तिनापुर, मथुरा, कन्नौज, कौशांबी, प्रयाग, चंद्रवंशियों की विस्तार भूमि और यहाँ का ब्रह्मावर्त तथा ब्रह्मामहऋषि देश जो पवित्र एवं आदर्श प्रदेश माना गया। राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से यह भारत का अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाग रहा है।

ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा ही महत्त्वपूर्ण भाग—गंगा व सरयू के बीच का विस्तृत भूभाग, इसके अंतर्गत पंचाल, अयोध्या, काशी, वाराणसी,रुहेलखंड, लखनऊ, फैजाबाद आदि दीर्घकाल तक राजनैतिक, प्रशासनिक, कला, संस्कृति केंद्र तथा व्यावसायिक केंद्र रहे हैं।

सरयू नदी के उस पार का क्षेत्र—ब्राह्मण धर्म के विकास की दृष्टि से बहुत प्रसिद्ध क्षेत्र रहा है। इसके अंतर्गत बहराइच, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर (हठयोगी गोरखनाथ की मूर्ति) और देवरिया, नेपालतराई में महात्मा बुद्ध की जन्म स्थली लुंबिनी स्थान है।

यमुना नदी का दक्षिण—इसमें बुंदेलखंड के झाँसी, जालौन, हमीरपुर, बाँदा, मिरजापुर, शामिल हैं। विंध्य पर्वत की शृंखला में पथशिला क्षेत्र जो गुप्तकाल तथा चंदेल शासनकाल की मूर्ति कला, देवमठ का प्रसिद्ध गुप्तकालीन मंदिर, चंदेलों के द्वारा निर्मित महोवा, कालपी बरुवासागर आदि में निर्मित मंदिर, किले तथा ऐतिहासिक अवशेष इनकी महानता को दर्शाते हैं। मिरजापुर तथा बांदा, मानिकपुर की अनेक ऐतिहासिक गुफाएँ एवं उनमें बनी चित्रकारियाँ, पाषाण एवं ताम्रयुग के औजार तत्कालीन शासकों के कला प्रेम को चरितार्थ करते हैं।

भारतीय इतिहास में गुप्तकाल स्वर्णयुग के नाम से प्रसिद्ध है। इस काल में सामाजिक, आर्थिक,कलात्मक एवं साहित्यिक शिक्षा क्षेत्रों में बड़ी उन्नति हुई, संगीत, कृषि, व्यवसाय में भी अग्रणी रहे। यह मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, महात्मा बुद्ध, जैन तीर्थंकरों आदि की अवतार भूमि है।

यह राष्ट्रभक्तों की जन्मस्थली है। लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, चंद्रशेखर आजाद, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, रफी अहमद, अटल बिहारी वाजपेयी, चरण सिंह, मदन मोहन मालवीय, लाल बहादुर शास्त्री आदि प्रमुख राष्ट्रभक्तों की जन्मस्थली है।

प्रसिद्ध पर्यटन केंद्र—ताजमहल (आगरा), सारनाथ (बनारस), बिठूर (कानपुर) गंगा-यमुना-सरस्वती त्रिवेणी संगम प्रयाग, कौशांबी, हस्तिनापुर, क्रांतिकारी भूमि मेरठ, नैमिषारण्

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

सीतापुर, भी यहाँ हैं। इस प्रदेश ने अनेक संस्कृताचार्य, प्रसिद्ध हिंदी लेखक, कवि, दार्शनिक राष्ट्र को प्रदान किए जिन्होंने भारत के गौरव को बढ़ाया। प्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचंद, कवि जयशंकर प्रसाद, लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल आदि अनेकानेक साहित्यकारों को जन्म देकर माँ सरस्वती के भंडार को भरा। भारत का इतिहास उत्तर प्रदेश के इतिहास के बिना अधूरा है। यह वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, पुराणों, आयुर्वेद, ज्योतिष की रचना तथा ऋषियों की तपस्थली, शोध भूमि रही है।

वृंदावन— श्रीकृष्ण की पावन लीला भूमि पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी व दक्षिणी कला संस्कृति का केंद्र, दुर्वासा ऋषि की तपस्थली पर स्थित गायत्री तपोभूमि, युगनिर्माण विद्यालय, गायत्री मंदिर, कृष्ण जन्म भूमि, गोवर्धन परिक्रमा हेतु हर वर्ष लाखों श्रद्धालु मथुरा पहुँचते हैं।

गायत्री के परम साधक, युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा संस्थापित गायत्री तपोभूमि एवं अखण्ड ज्योति संस्थान प्रमुख हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. श्री कृष्ण की जन्मभूमि कहाँ स्थित है?
2. दुर्वासा ऋषि की तपस्थली पर किस संस्था का निर्माण हुआ?
3. उत्तर प्रदेश में जन्मे राजनीतिज्ञों तथा साहित्यकारों के नाम की सूची बनाएँ।

महान वैज्ञानिक नागार्जुन

प्राचीनकाल में हमारे देश में ऐसे ऋषि-वैज्ञानिक हुए हैं जिन्होंने अपने बहुमूल्य आविष्कारों द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण रस, रसायन, भस्म आदि के निर्माण द्वारा मानवता की बड़ी सेवा की है। इन्हीं में से स्वनाम धन्य मनीषी श्री नागार्जुन का नाम प्रमुख है, जिन्होंने अपने ढांक (सौराष्ट्र) नगर का शासन अपने युवा पुत्र को सौंपकर पूर्णरूप से सारा जीवन अमृत, पारस और अन्य रसायनों की खोज में लगा दिया। उन्होंने नाना प्रकार की जड़ी-बूटियों, पादप-औषधियों की खोज-संग्रह कर, एक बड़ी प्रयोगशाला में शोधकार्य किए। सामान्य धातु को सोना बनाने का प्रयोग तो ताँबा पर किया गया लेकिन मानवीय औषधियों के लिए अज्ञात जड़ी-बूटियों का प्रयोग, प्राणों को संकट में डालकर अपने शरीर पर किया। वे मानव देह को दीर्घजीवी व आरोग्य बनाने वाले रसायन निर्माण के अंतिम चरण में थे, कि कुछ विद्वेषियों के षडयंत्र ने उनके जीवन व प्रयोगशाला को समूल नष्ट कर दिया। उनके शोधों की जानकारी उनके स्वरचित साहित्य 'रसोद्धार तंत्र' से की जा सकती है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

नारी मर्यादा की प्रतीक महारानी पद्‌मिनी

सल्तनतकालीन युग में मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़गढ़ थी। भारत के इतिहास में इस दुर्ग का गौरव बेमिसाल है। धरा, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए इस पर असंख्य बलिदान हुए। इस दुर्ग ने कई बार वीरों के रक्त से स्नान किया है। मर्यादा, आत्मसम्मान और वीरता की अनेक कहानियों ने इसे ऐतिहासिक गौरव का प्रतीक बना दिया। इस दुर्ग पर तेरहवीं शताब्दी में एक ऐसी महारानी हुई, जिसकी सुंदरता, बुद्धिमत्ता और मर्यादा इतिहास में अमर हो गई, वह महारानी पद्‌मिनी थी।

कहावत है कि कुल्हाड़ी को यदि लकड़ी का संबल न मिलता तो वह लकड़ियाँ नहीं काट सकती। इतिहास में अनेक राजाओं और राजवंशों के ध्वंस की प्रायः ऐसी ही कहानियाँ हैं, जिन्हें मरते दम यही अफसोस था कि ''हमें तो अपनों ने मारा, गैरों में कहाँ दम था।'' चित्तौड़ के रावल रतनसिंह ने एक तांत्रिक राघवचेतन की हरकतों से क्रुद्ध होकर उसे देश निकाला दे दिया। उसने तत्कालीन दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में जाकर रावल रतनसिंह की पत्नी महारानी पद्‌मिनी के रूप-सौंदर्य का ऐसा अलौकिक वर्णन किया कि ''वह कोमलांगी पानी भी पीए तो उसके गले में उतरता दिखाई दे।'' अस्तु, सुल्तान उसे पाने को अधीर हो उठा। वह फौज लेकर चित्तौड़गढ़ आ धमका। कई महीनों तक युद्ध चलता रहा,किंतु इस अभेद्य दुर्ग पर विजय पाना संभव नहीं था। आखिर उसने संदेश भिजवाया कि एक बार उसे पद्‌मिनी को दिखा दें, वह दिल्ली लौट जाएगा।

खिलजी की फौजें छः महीनों तक दुर्ग को घेरे पड़ी रहीं। दुर्ग पर रसद सामग्री समाप्त हो रही थी। बाहर से आने-जाने के रास्ते बंद थे। अतः मंत्रियों, सामंतों और सलाहकारों ने रावल से मिलकर इस आतंक से मुक्ति पाने के लिए ऐसा समयोचित निर्णय लिया कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। महारानी को भी पता न चले और खिलजी भी उसे देख ले। अकेले खिलजी को दुर्ग पर बुलाया। प्रकृति से मनुष्य की खुली चीजों पर प्रायः जिज्ञासा नहीं रहती, किंतु गोपनीय के प्रति उसकी उत्सुकता और लालसाएँ स्वतः जाग जाती हैं। परदा प्रथा की यही विडंबना रही है। परदे में रहने वाली औरतों को कोई देखे, यह राजपूती शान के खिलाफ था। खिलजी को कक्ष में भोजन कराते हुए सामने दीवार पर टँगा हुआ दर्पण दिखाया। उसमें खिड़की से बाहर सरोवर में स्थित पद्‌मिनी का महल दिख रहा था। उस समय बाहर सीढ़ियों पर बैठी महारानी जलचर पक्षियों से मनोविनोद कर रही थी। खिलजी ने उसे देखा तो मुँह का कौर मुँह में और हाथ का हाथ में रह गया। वह पसीने से तरबतर हो गया, किंतु अकेला था, विवश था। इस प्रकार वह महारानी को प्रत्यक्ष देख, उसका प्रतिबिंब ही देख पाया। भोजन के पश्चात उसे सम्मानपूर्वक विदा किया गया। आतिथ

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

धर्म का पालन करते हुए रावल रतनसिंह दुर्ग के अंतिम दरवाजे तक उसे पहुँचाने आए। दरवाजे के बाहर खिलजी के सैनिक तैनात खड़े थे। दरवाजा खुलते ही खिलजी ने छल से इशारा करके अपने सिपाहियों द्वारा रावल का अपहरण करवा लिया और उन्हें जीवित छोड़ने के बदले पद्मिनी की माँग की। दुर्ग के सभी राजपूत किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए।

ऐसी विकट परिस्थिति में महारानी ने अत्यंत सूझ-बूझ से काम लिया। उसने पत्र भिजवाया कि वह उसकी सेवा में तैयार है, किंतु उसके साथ उसकी सात सौ दासियाँ भी डोलियों में आ रही हैं। खिलजी ने अत्यंत खुश होकर इजाजत दे दी। उसकी फौज भी दासियों के समाचार से मदोन्मत्त थी। दुर्ग से डोलियों का काफिला उतरता नजर आया, खिलजी खुशी से खिलखिलाया, किंतु यह क्या? डोलियों में दासियों की जगह शस्त्रधारी राजपूत निकले। वे अचानक खिलजी की सेना पर टूट पड़े। इस अप्रत्याशित आक्रमण से खिलजी की सेना छिन्न-भिन्न हो गई। कई मारे गए तो कई भाग गए। वीरपुंगव गोरा और बादल ने रावल को तो छुड़ा लिया, किंतु खिलजी भाग निकला। अब तो वह पुनः दिल्ली से फौज लेकर आ गया। गोरा-बादल ने प्रचंड पराक्रम से शत्रु शोणित की नदियाँ बहा दीं, किंतु खिलजी की विशाल सेना के सम्मुख युद्ध के परिणाम भवितव्यता स्पष्ट थी। आखिर वे छल से मारे गए। उनकी वीरता इतिहास में अमर हो गई। उनके शौर्य के गीत आज भी गाए जाते हैं। अंततः रावल सहित सभी राजपूत केसरिया बाना पहनकर लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

स्पष्ट है कि यह भीषण नरसंहार नारी की सुंदरता के पीछे हुआ था। अब दुर्ग पर केवल नारियाँ ही बची थीं। पद्मिनी ने दुर्ग की सभी नारियों को शक्तिस्वरूपा बनकर रण में शौर्य दिखाने का आह्वान किया, किंतु देखा गया कि क्षत्राणियाँ तो संस्कारवश शस्त्र-संचालन और युद्धकौशल में पारंगत थी, अन्य सैकड़ों सेविकाओं ने पहले कभी शस्त्र हाथ में नहीं लिए थे। वे रणकौशल से अनभिज्ञ थीं। अतः रणांगण में कूच करने से क्षत्रिय वीरांगनाओं के बलिदान के पश्चात पीछे नेतृत्व विहीन अबला समुदाय पर शत्रुओं के अत्याचारों की संभावना सुस्पष्ट हो गई। ऐसी परिस्थिति में पातिव्रत्य की मर्यादा बचाने के लिए सामूहिक जौहर के सिवाय उनके सामने अन्य कोई उपाय न था। अस्तु, चित्तौड़ दुर्ग जौहर की विकराल ज्वालाओं से धधक उठा। पद्मिनी के साथ लगभग 1600 नारियाँ अग्नि की भयंकर लपटों में कूद गईं। खिलजी की फौज दुर्ग पर पहुँची, तब तक उनको राख से सिवाय और कुछ नहीं बचा था।

वे युग बीत गए, सदियाँ बीत गईं, आज भी चित्तौड़ दुर्ग पर प्रतिवर्ष उनकी पुण्यतिथि चैत्र कृष्णा एकादशी को जौहर मेला लगता है। हिंदू-मुसलिम सभी समुदाय के लोग उन्हें श्रद्धांजली देते हैं। संसार में महारानी पद्मिनी नारी मर्यादा की प्रतीक बन गईं।

अभ्यास प्रश्न

1. युद्ध का अंतिम परिणाम क्या था?
2. पद्मिनी किनकी पत्नी थी और अंत में उसने क्या निर्णय लिया?

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

भारतीय संस्कृति का दिव्य संदेश

स्वभावज कर्म ही सच्ची साधना है

भारतीय संस्कृति (आर्य संस्कृति) का दिव्य संदेश समस्त मानव जाति के कल्याण का, कर्मनिष्ठा का संदेश है। वो स्वयं को, परिवार को, समाज को, विश्व को सुख-शांति, अमन-चैन का जीवन दे सकने में समर्थ था, है और रहेगा।

गीता के अध्याय 18, श्लोक 41 से 44 तक स्वभाव से उत्पन्न गुणों द्वारा विभक्त किए गए कर्म की व्याख्या है जिसका यदि ईमानदारी से निष्ठापूर्वक ईश्वरीय आदेश तथा धर्म मानकर पालन किया जाए तो उससे अधिक बड़ी साधना, सेवा, त्याग तथा आत्मशक्ति नहीं, क्योंकि पूर्वजों द्वारा की गई धार्मिक व सामाजिक व्यवस्था हेतु निर्धारित कर्म चाहे जैसा भी हो करना ही मनुष्य मात्र के लिए गीता के अनुसार श्रेयष्कर, उन्नत तथा कल्याणकारी माना गया है। आचार्य श्री इस मर्म को एक कथानक द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

एक बार एक साधु पीपल के पेड़ के नीचे तपस्या कर रहे थे। समय बहुत हो गया, भूख सताने लगी। पेड़ पर बैठे एक पक्षी ने उस पर बीट कर दिया, उसने ऊपर देखा निगाह पक्षी पर पड़ी, बस क्या था तप से प्राप्त ऊर्जा-अग्नि से पक्षी भस्म हो गया। यह देखकर उस तपस्वी को अपनी सिद्धि पर अहंकार हो गया।

वह भूखा साधु भिक्षा हेतु एक घर पर पहुँचा। 'भिक्षां देहि' कहने लगा, भीतर से आवाज आई—रुकिए अपने भगवान (पति) की सेवा कर रही हूँ। काफी समय हो गया-मन ही मन क्रोधित हुआ—ये कैसी नारी है इधर-उधर नाच रही है कहती है कि सेवा-साधना कर रही हूँ। फिर भीतर से आवाज आई—महात्मा जी क्रोध मत करो, मैं वह पक्षी नहीं हूँ जिसे तुमने भस्म कर दिया। यह सुनकर वह हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि वहाँ कोई नहीं था, इसे कैसे मालूम कि पक्षी को भस्म किया था। पतिव्रता बाहर आई भिक्षा-अन्न दिया और कहा कि इससे अधिक जानना चाहते हो तो तुला नामक वणिक के पास चले जाओ वह सब रहस्य बता देगा, कि सेवा से प्राप्त साधना शक्ति एकांत साधना से ज्यादा शक्तिशाली होती है।

वह अहंकारी साधु तुला वणिक के पास पहुँचा। वणिक महोदय गाँव निवासियों को आवश्यक सामग्री लाकर ईमानदारी की तोल व उचित मुनाफा (केवल खर्च) लेकर सही साफ-सुथरी सामग्री उचित दाम पर देने में बड़ा ही आनंद का अनुभव करता तथा इस स्वाभाविक कर्म को ईमानदारी से संपन्न करना ही सबसे बड़ी साधना मानता था। क्योंकि सेवा, प्रेम ही सबसे बड़ी ईश्वरीय भक्ति है। इससे प्राप्त शक्ति से उन्होंने साधु महाराज को कहा—महात्मा जी थोड़ा रुकें।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

मैं इन ग्राहकों की सेवा कर लूँ तब मैं आपके प्रश्न का उत्तर दूँगा, आपको उस पतिव्रता ने यहाँ भेजा है। यह सुनकर वह वणिक की ओर झाँकने लगा, जमीन खिसकने लगी। तुलाधर वणिक ने उस आए महात्मा से कहा कि हमारा स्वाभाविक कर्म गौ सेवा, कृषि, व्यापार को ईमानदारी से प्रभु आदेश मानकर संपन्न करना ही धर्म मानते हैं। इसी से हमें आपसे भी अधिक तपशक्ति, दूरदृष्टि, आत्मज्ञान प्राप्त है। यदि इससे और भी अधिक जानना चाहते हो तो बस्ती में रहने वाले सुखिया नामक चांडाल से मिलें।

अपने मन में पछतावा लेकर स्वयं को धिक्कारता हुआ वह चांडाल बस्ती में पहुँचा। वहाँ उस चांडाल को समाज की दृष्टि में हेय (पशुवध, चीर फाड़ तथा शौच सफाई) कर्म करने में तल्लीन देखा तो घृणा करने लगा। यह चांडाल मुझे धर्म का, अध्यात्म का क्या उपदेश करेगा। यह जानकर चांडाल हँसकर बोला, महात्मन तुलाधर वणिक से भेजे गए मैं आपका स्वागत-नमन करता हूँ। आप थोड़ा रुकें, मुझे ईश्वर प्रदत्त अपने स्वाभाविक कर्म को ठीक से संपन्न करने का मौका दें। मैं आपकी आकांक्षाओं का समाधान करने का प्रयास करूँगा। यह सुनकर वह खामोश देखता रहा। प्रतीक्षा की, मन में गुस्सा तथा घृणा भी थी, पर यह सब कुछ बिना तप-साधना के इन्हें कैसे प्राप्त हुआ, यह सब कुछ जानने की शक्ति प्राप्त हुई, यह रहस्य भरा प्रश्न उसके मन में बार-बार उठता रहा। चांडाल ने कार्य पूर्ण कर स्नान करके महात्मा की शंका के प्रश्नों का समाधान कर बोला कि जो मनुष्य गुणों से विभक्त स्वभावजन्य कर्मों को ईमानदारी से, धर्म मानता हुआ, परम संतोष का अनुभव करता हुआ बिना हेय या घृणास्पद विचारों के संपन्न करता है वही सबसे बड़ा साधक, भक्त, तपस्वी, दूरदर्शी होता है। यही गीता का, वेदों का संदेश है। यही संस्कृति का दिव्य अनुदान है मानव जाति को। उसके बाद वह भी कर्मयोगी बनने की राह पर चला गया।

अभ्यास प्रश्न

1. वह पाखंडी साधु सर्वप्रथम भिक्षा लेने कहाँ गया?
2. चांडाल ने उसे सच्चे साधक कौन हैं विषय में क्या कहा?
3. उस तपस्वी साधु में अहंकार कब पैदा हुआ?

अब और कलंक नहीं

स्वामी रामतीर्थ के श्रेष्ठ व्यक्तित्व, विद्वता और ओजस्वी वाणी से प्रभावित होकर अमेरिका के 18 विश्वविद्यालयों ने उन्हें एल०एल०डी० की उपाधि से सम्मानित करने का प्रस्ताव रखा। जिसे उन्होंने सधन्यवाद अस्वीकार करते हुए कहा—"स्वामी और एम०ए० ये कलंक पहले ही नाम के आगे पीछे लगे हुए हैं अब तीसरे कलंक को कहाँ रखूँगा?"

यश, कीर्ति, लोकेषणा, प्रतिष्ठा आदि के फेर में पड़कर संतों और लोकसेवियों को अहंकार उभरता है। इसीलिए सच्चे संत मान-बड़ाई से सदा बचते रहते हैं।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

पाठ-07

हरीतिमा संवर्द्धन वृक्षारोपण का आधार वर्षा जल

मनुष्य के जीवन का अस्तित्व हरीतिमा संवर्द्धन पर टिका हुआ है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने युग निर्माण योजना के रचनात्मक कार्य में हरीतिमा संवर्द्धन को सबसे अधिक महत्त्व दिया है, यह भी सप्त क्रांतियों में एक है। इसके माध्यम से धरती की गरीबी दूर होती है और इसमें निवास करने वाले परिवारों की भी गरीबी दूर होती है। कुएँ, बावड़ी, झरनों में स्वच्छ जल दिखाई पड़ता है और वातावरण मनमोहक तथा स्वस्थ दिखता है।

मनुष्य का प्रयास न हो तो भी प्रकृति में रज व जल के संसर्ग से वनस्पति स्वत: आती रहती है, प्रकृति में विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी विभिन्न प्रकार के वनस्पतियों के फल खाकर विष्ठा के माध्यम से बीजों को धरतीमाता की गोद में गिराते रहते हैं। धरती पर वर्षा की बूंदें पड़ने पर वनस्पतियों का प्रादुर्भाव हो जाता है और यह क्रम निरंतर चलता रहता है। यदि किसी भूखंड को मनुष्यों के व पशुओं के हस्तक्षेप से बचा लिया जाए तो कुछ ही महीनों में स्वत: हरियाली छा जाती है। सिंचित क्षेत्रों में सिंचाई का जल तालाब, झील, नहर से लिया गया हो या पंपिगसेट, हैण्डपंप द्वारा भूमि से निकाला गया हो, उसका आधार भी केवल वर्षा जल ही है।

आधुनिक कृषि में अधिकाधिक उत्पादन के लिए अधिकाधिक रासायनिक खादों व कीटनाशकों के प्रयोग के साथ अधिकाधिक सिंचाई की प्रवृत्ति तथा उद्योगों में अनेकानेक पंपिग सेटों व ट्यूबवेल स्थापना की प्रवृत्ति ने भूमिगत जल स्तर इतना गिरा दिया है कि आएदिन ट्यूबवेलों व पंपिग सेटों पर प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं। आज से 20-30 वर्ष पूर्व जहाँ कुएँ-बावड़ियों में जल स्तर इतना ऊपर रहता था कि बिना रस्सी के भी पानी का प्रयोग किया जा सकता था, वहीं आज 150-200 फुट गहराई पर जल स्तर पहुँच गया है। अभी हाल में 14 से 18 फरवरी 2000 की अवधि में कृषि मंत्रालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् और राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली के लिए प्राकृतिक स्रोतों के प्रबंधन विषय पर भाग ले रहे वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी कि भारत में पानी का स्तर गिरता जा रहा है, यदि ऐसा ही चलता रहा तो वर्ष 2025 तक यह देश उन देशों की सूची में शामिल हो जाएगा जहाँ पानी के लिए मारा-मारी चल रही है।

यदि भूमिगत जल का एकतरफा दोहन नहीं रोका गया तो वर्षा आश्रित क्षेत्रों की हालत बिगड़ती जाएगी, पानी के लिए त्राहिमाम की स्थिति आ जाएगी।

अत: हमें हरीतिमा संवर्द्धन के लिए उपयोग में आ रहे हर स्रोत को कायम रखने के लिए उसके मूल स्रोत वर्षा संरक्षण की ओर विशेष कारगर उपाय करने होंगे, नहीं तो पानी की भीषण समस्या से जूझना पड़ेगा।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

इसके लिए जनजागरूकता अभियान चलाकर जन-जन को इससे अवगत कराना पड़ेगा ताकि समय रहते हम सब चेत जाएँ और वर्षा जल के संरक्षण संवर्द्धन में लग जाएँ।

गाँवों में वर्षा के जल को रोकने के लिए स्टॉप डैम बनाने को प्राथमिकता देने की योजना क्रियान्वयन हेतु प्रशिक्षण-सहयोग की ईमानदारी से पहल करनी होगी। शहरों में चूंकि सीमेन्टीकरण एवं डामरीकरण के कारण वर्षा का जल नालियों-नालों में बहकर नष्ट हो जाता है। संचय हेतु छतों पर वर्षा के जल को रोककर उसे जमीन में गड्ढे खोदकर पाईप के द्वारा पहुँचाया जाए तो यह जल जमीन में पहुँचकर कुँओं, हैंड पंप, पंप के लिए एक वरदान साबित हो सकता है। इसके लिए शासकीय, निजी सेवा संस्थानों को जन-जागरण अभियान चलाना होगा, साथ ही बरसात के समय भूमि पर अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाए। वे बड़े होने पर वर्षा के जल को अपनी जड़ों के माध्यम से भूमि के अंदर तक पहुँचाने में मदद करेंगे।

अभ्यास प्रश्न

1. पेड़-पौधे पौष्टिक तत्त्व प्राप्त करते हैं—
(A) वायु से (B) आकाश से (C) मिट्टी से (D) अग्नि से
2. प्रकृति में पेय जल की मात्रा है कुल जल का—
(A) 10 प्रतिशत (B) 7 प्रतिशत (C) 3 प्रतिशत (D) 1 प्रतिशत
3. जल संरक्षण की उपयुक्त विधि बताओ।
4. जैविक खेती का क्या महत्त्व है?

वैद्य के सेवा-भाव ने राजा का मन बदला

आयुर्वेद के प्रकांड विद्वान विद्याधर अपने दोनों पुत्रों को भी आयुर्वेद निष्णात बनाना चाहते थे पर बड़े पुत्र को पैसे से लोभ था विद्या से नहीं, सो वह अपने हिस्से का पैसा लेकर मौज-मस्ती में दिन बिताने लगा। पर दूसरे ने पिता की विद्या सीखी और अपनी संपत्ति भी उसी के विकास में लगाई।

एक दिन समीपवर्ती राजा ने इस राज्य पर आक्रमण कर दिया। सिपाहियों ने नगर में लूटपाट की। उसमें बड़े पुत्र की संपत्ति भी लुट गई। दूसरा पुत्र घायल सैनिकों की सेवा में जुट गया। उसी समय निरीक्षण करते महाराजा स्वयं वहाँ पहुँच गए। उन्होंने बिना किसी स्वार्थ के दोनों पक्षों के घायलों की सेवा करते वैद्य को देखा तो उनका हृदय बदल गया। उन्होंने न केवल युद्ध बंद करा दिया अपितु विद्याधर के उस पुत्र को भी अपने साथ लेते गए और उसे राजवैद्य नियुक्त किया। धन की तृष्णा और अपव्यय की आदत के कारण पहले पुत्र ने अंत तक दुर्गति पाई।

संस्कृति भ्रमर

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

वीरों की भूमि राजस्थान

राजस्थान की भूमि ने केवल वीरों को ही जन्म नहीं दिया, अपितु अपनी संस्कृति और राष्ट्रीय धरोहर को संजोकर रखा है। राजस्थान का इतिहास मुश्किलों, आपदाओं और निरंतर बलिदानी वीरों के बल पर खड़ा-खड़ा अपनी जुबानी बहुत कुछ कह भी रहा है। रेतीले धोरों की उबलती रेत साँझ ढलते-ढलते अपना रूप बदल लेती है। दूर-दूर तक फैले धोरों के ऊपर बनी रेखाएँ आज भी कोई इबारत लिख रही हैं।

शौर्य एवं बलिदान का धनी राजस्थान, वीर प्रसूता इस भूमि ने जहाँ स्वराज्य सूर्य महाराणा प्रताप, अस्सी-अस्सी घाव सहने वाले राणा साँगा, पृथ्वीराज चौहान, बप्पारावल, दुर्गादास, भामाशाह जैसे नर-पुंगवों को जन्म दिया, वहीं हाड़ारानी, किरण देवी तथा पन्ना धाय पद्मिनी जैसी वीरांगनाओं को भी अपनी कोख में पाला है। इसी भूमि से मीरा के भजनों ने भक्ति का अमित प्रवाह बहाया है।

अजमेर स्थित ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की प्रसिद्ध दरगाह, पुष्करतीर्थ, नाथद्वारा, महावीर स्वामी जी का मंदिर यहाँ के प्रमुख तीर्थस्थल व चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर(अलाउद्दीन खिलजी को पराजित करने वाले हमीरसिंह की राजधानी), अजमेर, आमेर, नाहरगढ़ व जोधपुर, कोटा-बूंदी आदि ऐतिहासिक दुर्ग-किले, अर्बुदाचल (आबू पर्वत), रणकपूर, जैसलमेर (रेत के टीले व पटवों की हवेली के लिए विख्यात), उदयपुर (झीलों की नगरी), जयपुर (गुलाबी नगर के नाम से प्रसिद्ध राजस्थान की राजधानी), प्रसिद्ध युद्ध स्थली हल्दीघाटी व अलवर, भरतपुर के अभयारण्य आदि मनमोहक पर्यटक स्थल व ऐतिहासिक नगर इस प्रदेश में स्थित हैं।

मध्यकाल से लेकर अब तक कितने ही वीर योद्धा, संत, ऋषि, बलिदानी (स्त्री-पुरुष) इस भूमि पर पैदा हुए लेकिन वह मरकर अमर हो गए। देह तो सबकी ही नश्वर होती है, लेकिन व्यक्तित्व, चरित्र, चिंतन और उसका बलिदान, तप, तपस्या कभी नहीं मरती। हम जब भी चाहें उनकी जीवनी और उनके सत्कर्मों के माध्यम से उनकी मौजूदगी को महसूस कर सकते हैं।

जिस वीरभूमि पर महाराणा प्रताप, भामाशाह, अमरसिंह राठौर, महाराजा सूरजमल दुर्गादास जैसी महान आत्माओं ने जन्म लिया है, भला आज उनसे कौन वाकिफ न होगा!

मीराबाई, पन्नाधाय, रानी जोधाबाई, रानी कर्मवती का त्याग, तप, तपस्या तथा वीरत्व आज इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है। अपने ईश्वर की स्तुति और कृष्ण को आराध्य

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

के रूप में पाकर मीरा ने अध्यात्म और भक्ति को नया आयाम दिया है। पन्नाधाय ने राजकुमार की जान बचाने के लिए अपने बेटे को कैसे कुरबान कर दिया, इसका इतिहास गवाह है किस प्रकार अपनी स्वामिभक्ति की मिसाल एक माँ को भी अंदर से रोने नहीं देती। रानी जोधाबाई ने अपने पिता की इच्छा को स्वीकारते हुए शादी तो कर ली, लेकिन अपनी संस्कृति, संस्कारों और साहस को नहीं छोड़ा। अपने मान-सम्मान को अपने साहस के बल पर बनाए रखा।

राजस्थान के वीरों-महापुरुषों ने अपनी संस्कृति, पहचान, अस्मिता, मान-मर्यादा और गौरव को बनाए रखने में महती भूमिका निभाई है। कुछ ऐसी भी वीर-वीरांगनाएँ हुई हैं, जिनके नाम इतिहास के पन्नों पर न लिखे हों, लेकिन राजस्थान की माटी के कण-कण में उनके शौर्य की महक समाई हुई है जो आज भी हमें आवाज देकर कह रही है।

राजस्थान के प्रमुख तीर्थों में से प्रमुख है पुष्कर। पुष्कर अजमेर जिला में नारद तथा सनकादि ऋषियों ने तपस्या की थी। यह पाँच प्रमुख सरोवरों में से एक माना जाता है। पर्वत शिखर पर ब्रह्मा जी का मंदिर है। उसके दाँए-बाँए गायत्री, सवित्री की भी प्रतिमाएँ हैं। यज्ञ पर्वत पर अगस्त्य आश्रम है। यहाँ सरस्वती नदी प्रवाहित होती है। नाग पर्वत पर भर्तृहरि शिला एवं गुफा विशेष रूप से दर्शनीय है। पुष्कर तीर्थ की चार परिक्रमाएँ हैं। इनमें अनेकों ऋषियों के निवास आश्रमों के स्मृति चिह्न हैं।

अजमेर शरीफ—अजमेर जिला में सूफी संत ख्वाजा चिश्ती की प्रसिद्ध मजार है जहाँ हिंदू, मुसलिम सभी पूजा-अर्चना, चादर, चढ़ावा जैसे धार्मिक कृत्य संपन्न करते हैं। यह समन्वयवादी दृष्टिकोण भारत तथा भारतीय धर्म व संस्कृति की अक्षुण्ण विशेषता है।

इसके अतिरिक्त जयपुर का हवाई महल-गलताजी की प्राकृतिक शोभा दर्शनीय है। जयपुर को गुलाबी शहर के नाम से भी जाना जाता है। यह एक अंतर्राष्ट्रीय हीरे-जवाहरातों का व्यापारिक केंद्र है। 'मिटना तो मेरी फितरत में नहीं गिरकर-मिटकर भी उठना ही सीखा है मैंने'।

अभ्यास प्रश्न

1. राजस्थान के प्रसिद्ध तीर्थों के नाम बताइए।
2. अजमेर में किसकी दरगाह है?
3. राजस्थान की उन महिलाओं के नाम लिखिए जिन्होंने अपना नाम अमर किया।
4. राजस्थान की विशेषता संक्षेप में लिखिए।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

विचार-क्रांति अभियान
गायत्रीतीर्थ, शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

धर्म और अध्यात्म क्षेत्र पर पुरुष का अधिकार बहुत समय से चला आ रहा है। फलतः वहाँ पाखण्ड और भ्रम जंजाल के अतिरिक्त और कुछ बच ही नहीं रहा है। मलीनता धोने वाले साबुन की बट्टी यदि कोयले के चूरे से बनने लगी हो तो स्वच्छता का लक्ष्य कभी भी पूरा न हो सकेगा। इस क्षेत्र में नारी को ही नेतृत्व करना चाहिए। ईश्वर ने उसकी आरम्भिक संरचना दिव्यता की अजस्त्र मात्रा का समावेश करते हुए ही की है। आज की गई बीती स्थिति में भी वह आदर्शवादिता एवं उत्कृष्टता का निर्वाह पुरुष की तुलना में असंख्य गुनी श्रेष्ठता के साथ निभा रही है। यह उसकी सहज प्रकृति और ईश्वर प्रदत्त विशिष्ट विभूति है। पुरुष बहुत श्रम करके जो आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त कर सकता है, वह नारी को अनायास ही उपलब्ध रहता है। आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता के जो लक्षण तत्वदर्शियों ने बताये हैं, उनमें से अधिकांश को नारी के सहज स्वभाव में समाया हुआ देखा जा सकता है। हम ऐसे उज्ज्वल भविष्य के सपने देखते हैं, जिसमें अगले दिनों नारी संसार के भावना क्षेत्र का नेतृत्व कर रही होगी और भौतिक क्षेत्र में सुव्यवस्था की सुदृढ़ नींव रख रही होगी।

–पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

Code No. BP-036

WWW.GRADESETTER.COM